Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग

भाग - 1

राजस्थान का इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत	1
2	राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग	13
3	राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति	27
4	गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश	31
5	चौहानों का इतिहास	36
6	मेवाड़ का इतिहास	51
7	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	73
8	आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)	89
9	जैसलमेर का भाटी वंश	104
10	करौली–भरतपुर का इतिहास	106
11	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	110
12	राजस्थान में किसान आंदोलन	120
13	राजस्थान की प्रशासन और राजस्व व्यवस्था	130
14	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	135
15	प्रजामंडल आंदोलन	144
16	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	155
17	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	164
18	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व	170

1. राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत

पिछले वर्षों के प्रश्न

Q1. अभिलेख, जो प्राचीन राजस्थान में भागवत सम्प्रदाय के प्रभाव की पुष्टि करता है (2016)

(1) घटियाला अभिलेख
(2) हेलियोदोरस का बेसनगर अभिलेख
(3) बुचकला अभिलेख
(4) घोसुण्डीं अभिलेख

2. राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग

Q2. निम्नलिखित किस प्राचीन स्थल के उत्बनन में मालव जनपद की लौह सामग्री के विशाल संग्रह की जानकारी प्राप्त हुई है ? (2023)

(1) नगर (नैनवाँ)
(2) नगरी (मध्यमिका)
(3) सांभर
(4) रैढ़ (टोंक)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Q3. झाड़ोल (उदयपुर), कुराड़ा (नागौर) और साबणिया (बीकानेर) में क्या समानता है ? (2023)

(1) ताम्रपाषाण संस्कृति के केन्द्र
(2) पुरा-पाषाण युग के केन्द्र
(3) लघु पाषाण उपकरण मिले हैं
(4) ताम्र उपकरणों के भण्डार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Q4. मौर्य कालीन मूर्तियों में, मणिभद्र (यक्ष) नाम से अंकित मूर्ति किस स्थान से प्राप्त हुई है? (2021)

(1) झींग-का-नगरा
(2) नोह ग्राम
(3) बेसनगर
(4) परखम

Q5. निम्नलिखित में से किस स्थल से शासक मिनेण्डर के सोलह सिक्के प्राप्त हुए हैं ? (2018)

(1) बैराठ
(2) नगरी
(3) रैढ़
(4) नगर

Q6. आहड़ सभ्यता के बारे में निम्न कथनों पर विचार कीजिए – (2021)

(A) आहड़वासी तांबा गलाना जानते थे।
(B) ये लोग चावल से परिचित नहीं थे।
(C) धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक साधन था।
(D) यहाँ से काले - लाल रंग मद्भाण्ड मिले हैं, जिन पर सामान्यतः सफेद रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी गई हैं।

सही विकल्प का चयन कीजिए -

(1) A, C एवं D सही हैं
(2) A एवं B सही हैं
(3) A, B एवं C सही हैं
(4) C एवं D सही हैं

4. गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश (6वीं शताब्दी से 12 वीं शताब्दी तक)

Q7. अरब यात्री सुलेमान ने किस प्रतिहार राजा के शासनकाल मे भारत की यात्रा की ? (2023)

(1) नागभट्ट द्वितीय
(2) नागभट्ट प्रथम
(3) वत्सराज
(4) भोज प्रथम
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Q8. निम्नलिखित में से कौन सा शासक गुर्जर-प्रतिहार राजवंश से संबंधित नहीं है ? (2018)

(1) नागभट्ट-II (2) महेन्द्रपाल-I

(3) देवपाल (4) भरत्रभट्ट-I

Q9. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जरप्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिए (2016)

(i) आहड का आदिवराह मंदिर (ii) आभानेरी का हर्षतमाता का मंदिर

(iii) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर (iv) ओसियाँ का हंरिहर मंदिर

कूट:

(1) (i) और (iv)

(2) (i), (ii) और (iv)

(3) (ii) और (iv)

(4) (i), (ii), (iii) और (iv)

5. चौहानों का इतिहास

Q10. अजमेर का पराक्रमी चौहान शासक जिसने दिल्ली पर विजय प्राप्त कर उसे अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया। वह था – (2023)

(1) विग्रहराज चतुर्थ (2) अर्णोराज

(3) अजयराज (4) पृथ्वीराज तृतीय

(5) अनुत्तरित प्रश्न.

Q11. 'ललित विग्रहराज' नाटक की रचना किसने की ? (2023

(1) हेमचन्द्र (2) कल्हण

(3) सोमदेव (4) महेश

(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. मेवाड़ का इतिहास

Q12. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट में से सही उत्तर चुनिए – (2021)

सूची-I

(A) गागरोण का युद्ध (B) सारंगपुर का युद्ध

(C) सुमेल का युद्ध (D) साहेबा का युद्ध

सूची-II

(i) 1519 ई. (ii) 1544 ई.

(iii) 1437 ई. (iv) 1541-42 ई.

कूट -

(1) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv) (2) A-(i), B-(iii), C-(ii), D-(iv)

(3) A-(ii), B-(iii), C-(iv), D-(i) (4) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)

Q13. निम्नलिखित में से कौन सा विद्वान कुम्भा के दरबार में नहीं था ? (2016)

(1) टिल्ला भट्ट (2) मुनि सुन्दर सूरी

(3) मुनि जिन विजय सूरी (4) नाथा

7. राठौड राजवंश और मारवाड़ का इतिहास

Q14. जोधपुर नरेश मानसिंह की रानी भटियाणी प्रतापकुँवरी ने अपने द्वारा बनाय गये मंदिर को पुन: अन्यत्र बनवाया, क्योंकि पहले वाला मंदिर जमीन में धंस गया था, और उसने उसकी प्राण प्रतिष्ठा 1857 में कराई। उस मंदिर का नाम है – (2021)

(1) कुंज बिहारी मंदिर
(2) महामंदिर
(3) घनश्यामजी का मंदिर
(4) तीजा मांजी का मंदिर

8. आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)

Q15. प्रसिद्ध चित्रकार मुहम्मद शाह जयपुर के किस महाराजा का दरबारी चित्रकार था ? (2023)

(1) सवाई राम सिंह द्वितीय
(2) सवाई जगत सिंह
(3) सवाई प्रताप सिंह
(4) सवाई जय सिंह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. राजस्थान और 1857 का विद्रोह

Q16. शेखावटी ब्रिगेड का मुख्यालय कहाँ स्थित था ? (2016)

(1) सीकर
(2) झुंदुनूं
(3) खेतड़ी
(4) फतेहपुर

Q17. निम्नलिखित में से किसने राजपूताना की देशी रियासतों के साथ 1817-18 की अधीनस्थ संधि की बातचीत की थी (2018)

(1) डेविड ऑक्टरलोनी
(2) चार्ल्स मैटकॉफ
(3) आर्थर वेलेजली
(4) जॉन जॉर्ज

12. राजस्थान में किसान आंदोलन

Q18. उस क्रांतिकारी महिला का नाम बताइये जिसने बिजौलिया किसान आन्दोलन में भाग लिया और उसे गिरफ्तार किया गया तथा 1930 के सत्याग्रह और 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और जेल गई – (2021)

(1) रमा देवी
(2) रतन शास्त्री
(3) अंजना देवी चौधरी
(4) किशोरी देवी

Q19. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है ? (2016)

कृषक आंदोलन	नेता
(1) बेगूं	रामनारायण चौधरी
(2) बूंदी	नयनूराम शर्मा
(3) बिजोलिया -	विजय सिंह पथिक
(4) बीकानेर -	नरोत्तम लाल जोशी

13. राजस्थान की प्रशासन और राजस्व व्यवस्था

Q20. राजस्थान के इतिहास में 'पट्टा रेख' से क्या अभिप्राय है ? (2016)

(1) आकलिंत राजस्व
(2) सैन्य कर
(3) आयात-निर्यात कर
(4) बेगार

Q21. राजस्थान के पूर्व मध्यकालीन राज्यों में "नैमित्तिक" पदनाम का प्रयोग किया जाता था (2018)

(1) राजकीय कवि के लिए। (2) लोक स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख के लिए।

(3) राजकीय ज्योतिष के लिए। (4) मुख्य न्यायिक अधिकारी के लिए।

14. राजस्थान में राजनीतिक जागृति

Q22. समाचार पत्र 'मज़हरूल सरूर' कहाँ से और कब प्रकाशित हुआ? (2021)

(1) भरतपुर. 1849 (2) जयपुर, 1856

(3) अजमेर, 1840 (4) उदयपुर, 1879

Q23. स्वतंत्रतापूर्व राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन सा समाचार-पत्र आर्य समाजी विचारधारा का संवर्धक नहीं था (2016)

(1) देश हितेषी (2) जनहितकारक

(3) परोपकारक (4) राजपूताना गज़ट

Q24. सुमेलित कीजिये (2016)

संस्था	स्थापना वर्ष
A. राजस्थान सेवा संघ	1. 1921
B. देश हितेषी सभा	2. 1927
C. अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्	3. 1877
D. चैबर ऑफ प्रिन्सेज	4. 1919

कूट:

	A	B	C	D
(1)	4	3	2	1
(2)	2	4	1	3
(3)	1	2	4	3
(4)	4	2	3	1

Q25. 'त्याग भूमि' के संपादक कौन थे ? (2018)

(1) हरिभाऊ उपाध्याय (2) जयनारायण व्यास

(3) देवी दत्त त्रिपाठी (4) ऋषि दत्त मेहता

15. प्रजामंडल आंदोलन

Q26. कन्हैया लाल मित्तल, मांगीलाल बाव्या और मकबूल आलम निम्नलिखित किस प्रजा मण्डल आन्दोलन से सम्बद्ध थे ? (2023)

(1) झालावाड़ राज्य प्रजा मण्डल (2) बाँसवाड़ा राज्य प्रजा मण्डल

(3) बूंदी ग़ाज्य प्रजा परिषद्य (4) करौली राज्य प्रजा मण्डल

(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण

Q27. मत्स्य संघ का वृहत् राजस्थान में विलय कंब हुआ ? (2023)

(1) 18 अप्रैल, 1948 (2) 25 जनवरी, 1950

(3) 30 मार्च, 1949 (4) 15 मई, 1949

(5) अनुत्तरित प्रश्न

Q28. देशी रियासत, जो 25 मार्च, 1948 को गठित संयुक्त राजस्थान का हिस्सा नहीं थी(2018)

(1) बूँदी (2) प्रतापगढ़

(3) उदयपुर (4) शाहपुरा

17. राजस्थान में जनजातीय आंदोलन

Q29. एकी आन्दोलन प्रारम्भ करने के पहले मोतीलाल तेजावत किस राजपूत ठिकाने में कामदार के पद पर कार्यरत थे ? (2023)

(1) झाड़ोल (2) सलूम्बर

(3) कोठारिया (4) देवगढ़

(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व

Q30. रूमा देवी के बारे में निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है? (2021)

(1) उन्हें हस्तशिल्प के क्षेत्र में जाना जाता है।

(2) वे जसरापुर (खेतड़ी) गाँव में पली - बढ़ी।

(3) उन्हें भारत् के राष्ट्रपति द्वारा 2018 में 'नारी शक्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

(4) उन्होंने हजारों महिलाओं को रोजगार बढ़ावा देने में अहम भागीदारी निभाई।

Q31. क्रांतिकारी, जिसे महन्त प्यारेलाल हत्याकांड में सजा मिली थी (2018)

(1) जोरावरसिंह (2) श्यामजी कृष्ण वर्मा

(3) केसरीसिंह बारहठ (4) विजयसिंह पथिक

19. Others

Q32. निम्नलिखित में से सर्वप्रथम किसने राजस्थान के राजसी शासक वर्ग के लिये पृथक् शिक्षा संस्थान की आवश्यकता पर बल दिया था ? (2016)

(1) कर्नल लोच (2) लॉर्ड लैंसडाऊन

(3) कैप्टन वाल्टर (4) लॉर्ड मेयो

विश्लेषण- RPSC का रुझान बताता है कि RAS प्रारम्भिक परीक्षा में प्रतिवर्ष राजस्थान के इतिहास से संबंधित लगभग 6 - 7 प्रश्न पूछे जाते हैं। ये प्रश्न सामान्यतः सरल और तथ्यात्मक होते हैं, जिन्हें सही तथ्यों की जानकारी से आसानी से हल किया जा सकता है। राजस्थान इतिहास के प्रमुख स्त्रोतों और प्राचीन युग से प्रतिवर्ष एक प्रश्न पूछा ही जाता है, इसलिए इस भाग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। विभिन्न राजवंशों जैसे सिसोदिया(मेवाड़), राठौड़, गुर्जर प्रतिहार व परमार, चौहान, कच्छवाहा तथा भाटी वंश आदि से प्रतिवर्ष 2 – 3 प्रश्न पूछे जाते है, अत: इन्हें भी सामान्य जानकारी के साथ तैयार करना चाहिए। राजस्थान का आधुनिक इतिहास परीक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसकी गहरी समझ से अधिकतम अंक प्राप्त किए जा सकते है, क्योंकि प्रतिवर्ष यहाँ से 3 - 4 प्रश्न पूछे जाते है। इस भाग से सामान्यत: राजस्थान और 1857 का विद्रोह, किसान आंदोलन, राजस्थान की प्रशासन और राजस्व व्यवस्था, राजनीतिक जागृति(समाचार-पत्र), प्रजामंडल आंदोलन, एकीकरण, जनजातीय आंदोलन और प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व संबंधी प्रश्न पूछे जाते है।

1 CHAPTER राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत

- राजस्थान इतिहास के जनक - कर्नल जेम्स टॉड को कहा जाता है।
  - ✓ वे वर्ष 1818 से 1821 ई. के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत के पोलिटिकल एजेन्ट थे।
  - ✓ उन्हें घोडे वाले बाबा कहते थे।
  - ✓ राजस्थान के इतिहास के बारे में लिखी इनकी पुस्तक एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ़ राजस्थान लन्दन में वर्ष 1829 में प्रकाशित हुई ।
  - ✓ गौरी शंकर हीराचन्द ओझा द्वारा इस पुस्तक का सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद।
  - ✓ अन्य पुस्तक - ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया
  - ✓ मृत्यु पश्चात वर्ष 1837 में पत्नी द्वारा प्रकाशन ।
- राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य सर्वप्रथम (1871 ई) प्रारम्भ करने का श्रेय ए.सी.एल. कार्लाइल को जाता है I

राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्त्रोत

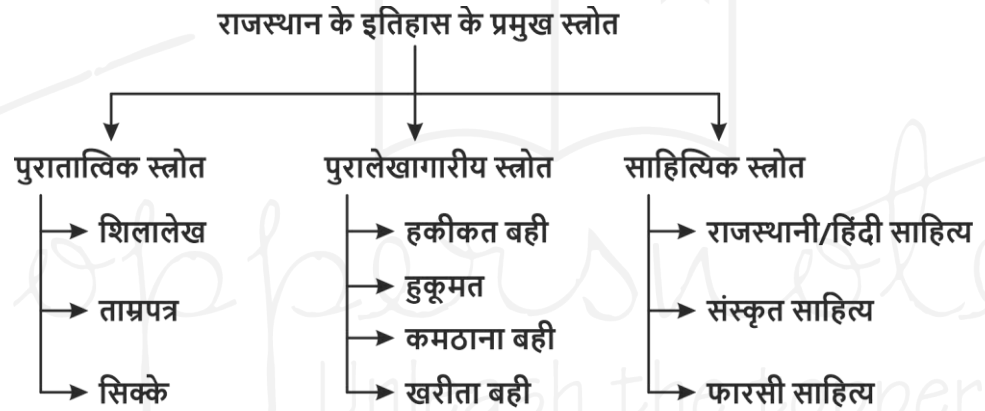

शिलालेख

रायसिंह प्रशस्ति (बीकानेर 1594 ई. में)	➢ प्रशस्तिकार- जैन मुनि जैता। ➢ इसमें राव बीका से लेकर राव रायसिंह तक के बीकानेर के विभिन्न शासकों की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है । ➢ इसके अनुसार बीकानेर दुर्ग का निर्माण 30 जनवरी, 1589 से 1594 ई. तक राव रायसिंह ने अपने मंत्री करमचंद द्वारा पूरा करवाया था।
मंडोर अभिलेख (685 ई में जोधपुर)	➢ यह गुर्जर नरेश बाउक की प्रशस्ति है। ➢ इस में गुर्जर प्रतिहारों की वंशावली, विष्णु एवं शिव पूजा का उल्लेख किया गया है।

सच्चिका माता मंदिर प्रशस्ति (1179 ई. ओसिया, जोधपुर)	➢ सच्चियाय माता के मंदिर, में उत्कीर्ण किया गया है। ➢ इसमें कल्हण को महाराजा एवं कीर्तिपाल को मांडव्यपुर का अधिपति बताया गया है एवं धारावर्ष को विजयी बताया गया है।
बिजौलिया शिलालेख (1170 ई., भीलवाड़ा)	➢ 1170 ई. में इसे बिजौलिया के पार्श्वनाथ मन्दिर परिसर की एक बड़ी चट्टान पर संस्कृत में उत्कीर्ण किया गया। ➢ इस अभिलेख की स्थापना जैन श्रावक लोलक द्वारा कराई गई थी तथा इसके लेखक कायस्थ केशव थे। ➢ रचयिता- गुणभद्र। ➢ इसमें चौहानों को वत्सगोत्रीय ब्राह्मण (डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार) बताते हुए वंशावली दी गई है। ➢ चौहान राजा सोमेश्वर के शासन काल में | ➢ इसमें जाबालिपुर (जालौर), शाकम्भरी, श्रीमाल जैसे प्राचीन नगरों का उल्लेख है। ➢ इस अभिलेख में उल्लेख है कि चौहानों के मूलपुरुष वासुदेव चौहान ने 551 AD के लगभग शाकंभरी में चाहमान (चौहान) वंश के राज्य की स्थापना की एवं सांभर झील बनवाई थी। साथ ही यह भी बताया गया है कि वासुदेव ने अहिछत्रपुर (नागौर) को अपनी राजधानी बनाया था।
घटियाला अभिलेख (861 ई. जोधपुर)	➢ रचयिता – मग जाति के ब्राह्मण ➢ उत्कीणकर्ता – स्वर्णकार कृष्णेश्वर ➢ प्रतिहार राजा – कक्कुक ➢ साल माता जैन मंदिर मंडोर (जोधपुर) में स्थित ➢ भाषा – संस्कृत ➢ हरिश्चंद्र के चार पुत्रों भोगभट, कक्कुक, रज्जिल और दह का उल्लेख मिलता है
बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई. सिरोही)	➢ यह बसंतगढ़ (सिरोही) के जगन्माता मंदिर क्षेमकरी (खिमेल) माता मंदिर से प्राप्त हुआ है। ➢ यह लेख राजा वर्मलात के समय का है। ➢ इस लेख में राज्जिल, जो वज्रभट (सत्याश्रय) का पुत्र था और अर्बुद देश का राजा था, के बारे में वर्णन मिलता है। ➢ इस अभिलेख में राजस्थान शब्द का प्राचीनतम प्रयोग 'राजस्थानीयादित्य' के रूप में किया गया है।
चिरवा का अभिलेख (1273 ई. \ वि.सं. 1330 उदयपुर)	➢ प्रशस्तिकार – रत्नप्रभ सूरी ➢ शिल्पकार – देल्हण ➢ लेखक - पार्श्वचन्द्र ➢ भाषा -संस्कृत

	➢ गुहिल वंशीय बप्पा रावल के वंशधर पदम सिंह, जैत्र सिंह, तेज सिंह और समर सिंह की उपलब्धियो का उल्लेख है ➢ 13वीं सदी की ग्राम्य व्यवस्था, सामाजिक-धार्मिक जीवन की जानकारी | ➢ विष्णु मंदिर व शिव मंदिर के लिए भूमि अनुदान का वर्णन मिलता है
अपराजित का शिलालेख (661 ई. उदयपुर)	➢ 661 ई. में उदयपुर जिले के नागदा गाँव के निकट कुंडेश्वर मंदिर की दीवार पर अंकित किया गया। ➢ रचयिता - दामोदर ➢ यह लेख गुहिल वंश के राजा अपराजित के बारे में वर्णन करता है।
सामोली अभिलेख (646) (उदयपुर)	➢ इसके अनुसार वटनगर (सिरोही) से आये हुए महाजन समुदाय के मुखिया जेंतक महत्तर ने अरण्यवासिनी देवी (जावर माता का) मंदिर बनवाया था। ➢ गुहिल शासक शिलादित्य के समकालीन ➢ यह अभिलेख जावर के निकट अरण्यगिरी में ताँबे व जस्ते के खनन उद्योग की जानकारी देता है।
आमेर का लेख (1612 ई. जयपुर)	➢ इसमें कछवाहा वंश को रघुवंशतिलक"' कहकर संबोधित किया गया है। ➢ इसमें पृथ्वीराज, भारमल, भगवन्तदास का उल्लेख है तथा मानसिंह को भगवन्तदास का पुत्र बताया गया है।
भाब्रू शिलालेख (मौर्य कालीन, 268-232 ई. पू.) (जयपुर)	➢ यहाँ अशोक मौर्य के 2 शिलालेख मिले हैं ➢ यह 1837 ई. में "बीजक की पहाड़ी से कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया था। ➢ वर्तमान में यह कलकता संग्रहालय में रखा है । ➢ इससे अशोक के बुद्ध धर्म का अनुयायी होना सिद्ध होता है एवं अशोक द्वारा बुद्ध, धम्म एवं संघ की शरण में जाने को कहा गया है । ➢ इसे मौर्य सम्राट अशोक ने स्वयं उत्कीर्ण करवाया था ।
घोसुण्डी शिलालेख (द्वितीय सदी ई. पू.), (चित्तौडगढ़)	➢ घोसुण्डी, चित्तौडगढ़ से प्राप्त हुआ । ➢ भाषा -संस्कृत, लिपि- ब्राह्मी । ➢ सर्वप्रथम डी. आर. भंडारकर द्वारा पढ़ा गया । ➢ वैष्णव या भागवत धर्म की जानकारी देने वाला राजस्थान का प्राचीनतम अभिल्लेख । ➢ समयकाल – दूसरी सदी ई. पूर्व ➢ एक बड़ा खण्ड उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित । ➢ अश्वमेध यज्ञ करने और विष्णु (वासुदेव) मंदिर की चारदीवारी बनवाने का वर्णन है।
नगरी का शिलालेख (200-150 ई.पू) (चित्तौडगढ़)	➢ ब्राह्मी लिपि में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण किया गया है। ➢ इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख से मिलती है । ➢ डॉ गोरीशंकर हिराचंद ओझा को नगरी नामक स्थान से प्राप्त हुआ ➢ राजस्थान वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर संग्रहालय में स्थित ।

मानमोरी का शिलालेख (सन 713 ई.) (चित्तौडगढ़)	➢ मौर्य वंश से सम्बंधित यह लेख चित्तौड के पास मानसरोवर झील के तट से कर्नल टॉड को मिला था। ➢ चार मौर्य राजाओं – महेश्वर, भीम, भोज एवं मान का उल्लेख ➢ इसका प्रशस्तिकार नागभट्ट का पुत्र पुष्य है और उत्कीर्णक करुण का पौत्र शिवादित्य है। ➢ चित्रांगद मौर्य का उल्लेख है जिसने चित्तौडगढ़ का निर्माण करवाया । ➢ कर्नल जेम्स टॉड ने इसे इंग्लैंड ले जाते समय असंतुलन की वजह से समुद्र में फेंक दिया था। ➢ इसमें भीम को अवन्तिपुर का राजा बताया है। ➢ इसमें चित्तौड़ दुर्ग (चित्रकूट) का निर्माण करवाने वाले मौर्य शासक चित्रांग (चित्रांगद) का भी उल्लेख है I
राज प्रशस्ति (1676 ई./वि.स. 1732) (राजसमंद)	➢ भाषा = संस्कृत, परन्तु अन्त में कुछ पंक्तियाँ हिन्दी में भी है I ➢ देश का सबसे बड़ा संस्कृत शिलालेख है I ➢ इस प्रशस्ति को राजसिंह प्रशस्ति महाकाव्य की संज्ञा दी गई है I ➢ इस प्रशस्ति में राजसिंह के अकाल राहत कार्यों, किशनगढ़ की राजकुमारी चारूमती से विवाह का उल्लेख है I ➢ प्रशस्तिकार- रणछोड़ भट्ट द्वारा I ➢ महाराणा राजसिंह सिसोदिया के समय स्थापित करवाया गया था। ➢ यह राजसमन्द झील की 9 चौकी की पाल पर 25 श्लोकों में उत्कीर्ण विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है। ➢ इसमें बापा रावल से लेकर राणा जगतसिंह द्वितीय तक की गुहिलों की वंशावली है। ➢ इसमें महाराणा अमरसिंह द्वारा की गई मुगल मेवाड संधि का वर्णन है।
कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई., राजसमंद)	➢ प्रशस्तिकार उत्कीर्णक /- कवि महेश ➢ राजस्थान के राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भश्याम मंदिर में स्थित पाँच शिलाओं में उत्कीर्ण है। ➢ इसमें बाप्पा रावल को विप्रवंशीय बताया गया है। ➢ इसमें हम्मीर का चेलावाट जीतने का वर्णन है और उसे विषमघाटी पंचानन कहा गया है। ➢ उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है I
कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति (1460 ई., चित्तौडगढ़)	➢ प्रशस्तिकार- महेश भट्ट ➢ रचयिता- अत्रि और महेश ➢ यह राणा कुम्भा की प्रशस्ति है। ➢ चित्तौड़ किले में कीर्ति स्तंभ पर 'संस्कृत' भाषा में उत्कीर्ण I ➢ इसमें राणा कुम्भा को महाराजाधिराज, अभिनव भरताचार्य, हिन्दू सुरताण, रायरायन, राणो रासो छापगुरु, दानगुरु, राजगुरु, शैलगुरु, चापगुरु आदि के नाम से संबोधित किया गया है। ➢ इसमें मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं को कुम्भा द्वारा पराजित किये जाने का वर्णन किया गया है एवं तत्पश्चात विजय स्तंभ निर्माण करवाने का उल्लेख है।

रणकपुर प्रशस्ति (1439 ई. या वि.सं. 1496), पाली	➢ इसे रणकपुर के जैन चौमुखा मंदिर में उत्कीर्ण करवाया गया । ➢ मंदिर का सूत्रधार – दैपाक ➢ भाषा – संस्कृत एवं नागरी ➢ मेवाड के राजवंश एवं धरणकशाह जैन के वंश का परिचय मिलता है। ➢ बप्पा एवं कालभोज को अलग- अलग व्यक्ति बताया गया है। ➢ गुहिलों को बाप्पा रावल के पुत्र बताया गया है।
जगन्नाथराय प्रशस्ति (1652 ई., उदयपुर)	➢ प्रशस्तिकार – कृष्णभट्ट व लक्ष्मीनाथ ➢ इसमें बाप्पा रावल से लेकर जगतसिंह सिसोदिया तक गुहिलों का वर्णन है। ➢ यह उदयपुर के जगन्नाथ राय मंदिर में स्थित है। ➢ प्रताप के समय लड़े गए हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन किया गया है। ➢ प्रशस्ति के अनुसार महाराणा ने पिछोला के तालाब में मोहन मंदिर बनवाया और रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।
श्रृंगी ऋषि का शिलालेख (1428 ई. उदयपुर)	➢ संस्कृत भाषा में ➢ हम्मीर से मोकल तक के शासको का वर्णन किया गया है। ➢ मोकल द्वारा कुण्ड बनाने और उसके वंश का वर्णन किया गया है। ➢ रचनाकार कविराज वाणीविलास योगेश्वर ➢ उत्कीर्णकर्ता- फना
बरनाला अभिलेख (278 ई.)	➢ वैष्णव सम्प्रदाय ➢ जयपुर

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

नाम	स्थान	काल	विवरण
बडली \बरली का शिलालेख	अजमेर (घिलोत माता के मन्दिर से)	दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व	➢ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त ➢ राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख ➢ ब्राह्मी लिपि ➢ वर्तमान में अजमेर संग्राहलय में सुरक्षित है ।
नान्दसा यूप स्तम्भ लेख	भीलवाड़ा	225 ई.	➢ इसकी स्थापना सोम द्वारा की गई ।
बड़वा यूप अभिलेख	कोटा (बडवा गाँव में)	238-39 ई.	➢ भाषा - संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी उत्तरी है । ➢ इसमें मौखरी राजाओं का वर्णन मिलता है और उनसे संबंधित यह सबसे पुराना और पहला अभिलेख है। ➢ यह तीन यूप (स्तंभ) पर खुदा है ।
भ्रमरमाता का लेख	चित्तौड़	490 ई.	➢ गौर वंश और औलिकर वंश के शासकों का वर्णन मिलता है ।

			➢ रचयिता – ब्रह्मसोम (मित्रसोम के पुत्र) ➢ लेखक – पूर्वा ➢ राजपुत्र शब्द का उल्लेख
दस्तूर कौमवार	जयपुर		➢ दस्तूर कौमवार जयपुर राज्य के अभिलेखों की महत्वपूर्ण अभिलेख श्रृंखला है ➢ जयपुर रियासत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
कणसवा अभिलेख	कोटा	738 ई.	➢ मौर्य वंशी राजा धवल का उल्लेख (शायद राजस्थान का अंतिम मौर्य शासक) ।
ग्वालियर प्रशस्ति		880 ई.	➢ मिहिरभोज प्रथम की देन ➢ संस्कृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण ➢ लेखक – भट्टधनिक का पुत्र बालादित्य ➢ गुर्जर प्रतिहारों के वंशावलियों एवं उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है ।
प्रतापगढ़ अभिलेख	प्रतापगढ़	946 ई.	➢ गुर्जर प्रतिहार नरेश महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन है।
अचलेश्वर प्रशस्ति	आबू		➢ इसमें पुरुष के अग्निकुंड से उत्पन्न होने का उल्लेख है। ➢ धूम्रराज को परमारों का मूल पुरुष या आदि पुरुष माना जाता है।
लूणवसही की प्रशस्ति	आबू-देलवाड़ा	1230 ई.	➢ भाषा - संस्कृत ➢ इसमें आबू के परमार शासकों और वास्तुपाल तेजपाल के वंश का वर्णन है। ➢ नेमीनाथ प्रशस्ति में आबू के शासक धारावर्ष का वर्णन है।
नाथ प्रशस्ति	लकुलिश मंदिर (उदयपुर)	971 ई.	➢ मेवाड़ के इतिहास का वर्णन ➢ भाषा – संस्कृत ➢ लिपि - देवनागरी
नेमीनाथ की प्रशस्ति	आबू	1230 ई.	➢ रचयिता - सोमेश्वरदेव (शुभचन्द्र) ➢ सुरथोत्सव के रचयिता (शुभचन्द्र) ➢ उत्कीर्णकर्ता सूत्रधार चण्डेश्वर
बरबद का लेख	बयाना	1613-14 ई.	➢ इसमें अकबर की पत्नी मरियम उस -ज़मानी के द्वारा बरबथ में एक बाग़ और बावड़ी का निर्माण करने का उल्लेख है।

बर्नाला यूप स्तम्भ लेख	जयपुर	227 ई.	
चाकसु अभिलेख	जयपुर	813 ई.	➢ गुहिल वंशीय भरत्रभट्ट और उसके वंशजों का वर्णन है। ➢ उत्कीर्णकर्ता – देइआ
बुचकला अभिलेख	जोधपुर (बिलाडा)	815 ई.	➢ वत्सराज के पुत्र नागभट्ट प्रतिहार का उल्लेख है। ➢ सूत्रधार – देइ
राजोरगढ़ अभिलेख	अलवर	960 ई.	➢ मथनदेव प्रतिहार
हर्ष अभिलेख	सीकर	973 ई.	➢ चौहानों के वंशक्रम का उल्लेख । ➢ हर्षनाथ (सीकर) मंदिर का निर्माण अल्लट द्वारा करवाये जाने का उल्लेख । ➢ वागड़ को वार्गट कहा गया I
रसिया की छतरी का शिलालेख	चित्तौड़गढ़	1274 ई.	➢ रचयिता - प्रियपटु के पुत्र नागर जाति के ब्राह्मण वेद शर्मा I ➢ सूत्रधार - सूत्रधार सज्जन ➢ इसमें गुहिल को बापा का पुत्र बताया गया है। ➢ गुहिल वंशीय शासकों की जानकारी (बप्पा से नरवर्मा तक) I
डूंगरपुर की प्रशस्ति	डूँगरपुर	1404 ई	➢ उपरगाँव (डूँगरपुर) में में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण । ➢ वागड़ के राजवंशों के इतिहास का वर्णन।

सिक्के

- सर्वप्रथम राजस्थान के चौहान वंश ने मुद्राएँ जारी की।
  - ✓ ताँबे के सिक्के - द्रम्म और विशोपक
  - ✓ चाँदी के सिक्के - रूपक
  - ✓ सोने के सिक्के - दीनार
- मेवाड़ में प्रचलित सिक्के –
  - ✓ ताँम्बे के सिक्के- ढिंगला, भिलाडी. त्रिशुलिया, भिडरिया, नाथद्वारिया I
  - ✓ चाँदी के सिक्के- द्रम, रूपक I
- अकबर ने राजस्थान में सिक्का एलची जारी किया। (चित्तोड़ विजय के बाद) I
  - ✓ अकबर ने आमेर में सर्वप्रथम टकसाल खोलने की अनुमति दी I
- अंग्रेजों के समय जारी मुद्राओं में कलदार (चाँदी)

सर्वाधिक प्रसिद्ध

महत्वपूर्ण तथ्य

- 1871 में कार्लाइल को नगर (उणियारा) से लगभग 6000 मालव सिक्के मिले थे I
- तत्कालीन राजपूताना की रियासतों के सिक्कों के विषय पर वेब ने 1893 ई.में "द करेंसीज ऑफ द हिंदू स्टेट ऑफ राजपूताना" नामक पुस्तक लिखी।
- रैढ़ (टोंक) में खुदाई के दौरान 3075 चाँदी के पंचमार्क सिक्के मिले हैं इन सिक्कों को धरण या पण कहा जाता था। इन सिक्कों का समयकाल 600 ई. पू. - 200 ई. पू.
- रंगमहल (हनुमानगढ़) से आहत मुद्रा एवं कुषाण कालीन मुद्राएँ मिली है।
- बैराठ सभ्यता (कोटपुतली-बहरोड़) से भी अनेक मुद्राएँ मिली है जिनमें से 16 मुद्राएँ प्रसिद्ध यूनानी शासक मिनेण्डर की है।
- इंड्रो - सासानी सिक्कों (दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में प्रचलित) की भारतीयों ने गधिया नाम से पहचान की है जो चाँदी और ताम्र धातु के बने हुए होते थे।
- मेवाड़ के स्वरूपशाही और मारवाड़ के आलमशाही सिक्के ब्रिटिश प्रभाव वाले थे जिनमें "औरंग आराम हिंद एवं इंग्लिस्तान क्वीन विक्टोरिया" लिखा होता था।
- राजस्थान में सर्वप्रथम 1900 ई. में स्थानीय सिक्कों के स्थान पर कलदार का चालान जारी हुआ।

राजस्थान के प्राचीन सिक्के

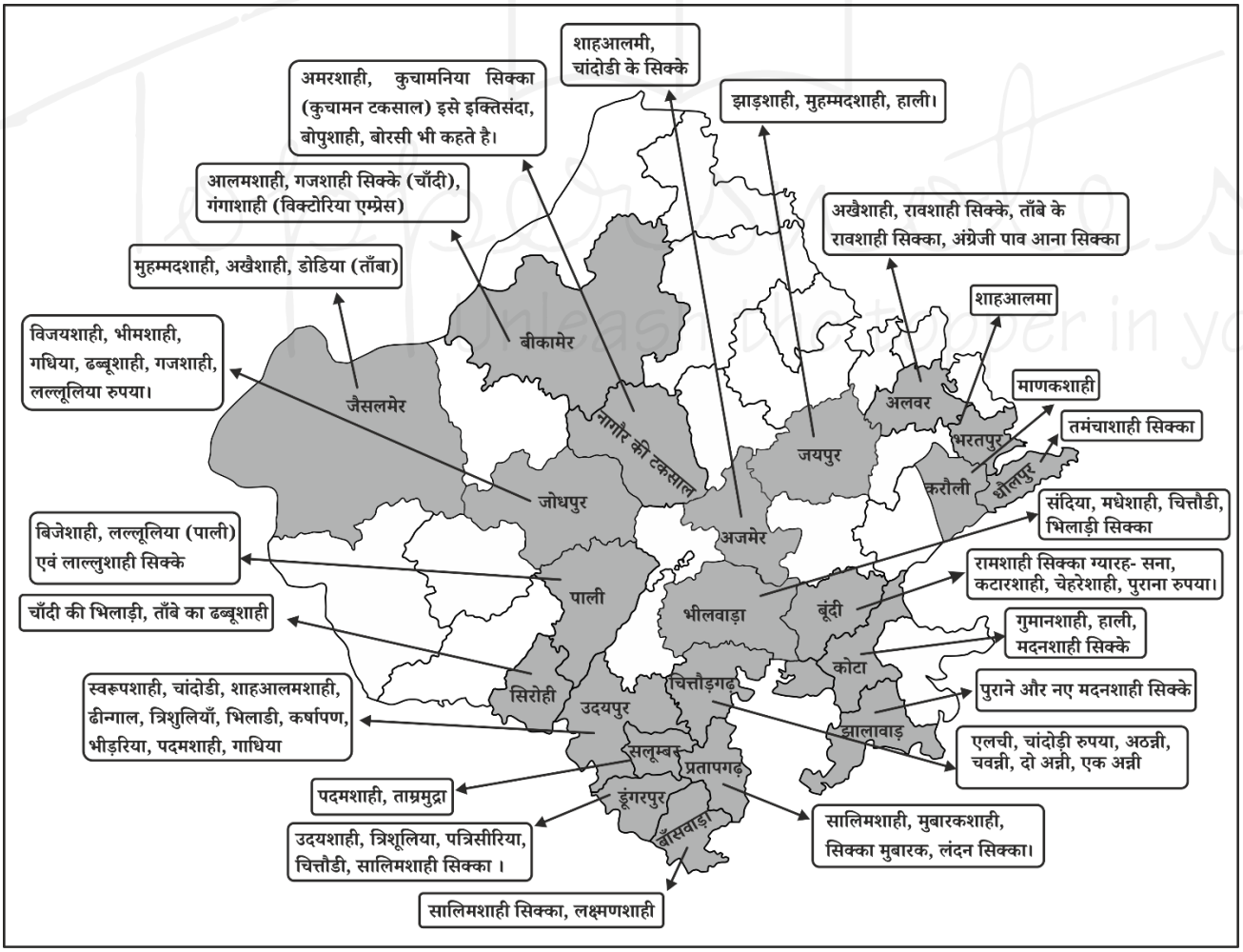

ताम्रपत्र

राजस्थान के प्रमुख ताम्र पत्र

ताम्र पत्र	काल	विवरण
धुलेव का दान पत्र	679 ई.	➢ किष्किंधा (कल्याणपुर) के राजा भेटी द्वारा उब्बरक नामक गांव को भट्टिनाग नामक ब्राह्मण को अनुदान देने का उल्लेख I
ब्रोच गुर्जर ताम्रपात्र	978 ई.	➢ गुर्जर वंश के सप्तसैंधव भारत से लेकर गंगा कावेरी तक के अभियान का वर्णन। ➢ इसके आधार पर कनिंघम ने राजपूतों को कुषाणों की यू-ए-ची जाति का माना।
मथनदेव का ताम्र-पत्र	959 ई.	➢ मंदिर के लिए भूमि दान की व्यवस्था का उल्लेख है।
वीरपुर का दान पत्र	1185 ई.	➢ इसमें गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के सामंत वागड़ के गुहिल वंशीय राजा अमृतपालदेव के सूर्यपर्व पर भूमिदान देने का उल्लेख है।
आहड़ ताम्र-पत्र	1206 ई.	➢ गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव (द्वितीय) का है। ➢ गुजरात के मूलराज से भीमदेव द्वितीय तक सोलंकी राजाओं की वंशावली दी गई है । ➢ मेवाड़ में गुजरात के चालुक्यों का शासन होना प्रमाणित होता है । ➢ इसमें यह भी पता चलता है कि भीमदेव के समय में मेवाड़ पर गुजरात का प्रभुत्व था ।
पारसोली का ताम्र-पत्र	1473 ई.	➢ महाराणा रायमल के समय का है। ➢ भूमि की किस्मों का उल्लेख – पीवल, गोरमो, माल, मगरा । ➢ यह भूमि उस समय की सभी लागतों से मुक्त थीं।
खेरादा ताम्र-पत्र	1437 ई.	➢ एकलिंगजी में राणा कुंभा द्वारा किए गए प्रायश्चित, उस समय का दान, धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
चीकली ताम्र-पत्र	1483 ई.	➢ किसानों से एकत्र किए जाने वाले 'विविध लाग-बागों' को दर्शाता है। ➢ पटेल, सुथार और ब्राह्मणों द्वारा खेती का वर्णन। ➢ वागडी भाषा में उत्कीर्ण।
ढोल का ताम्र-पत्र	1574 ई.	➢ महाराणा प्रताप के समय का है जब उन्होंने ढोल नामक एक गाँव में सैन्य चौकी का प्रबंधन किया था और अपने प्रबंधक जोशी पुणो को ढोल में भूमि अनुदान दिया।
पुर का ताम्र-पत्र	1535 ई.	➢ जौहर में प्रवेश करते समय हाड़ी रानी कर्मावती द्वारा दिए गए भूमि अनुदान के बारे में जानकारी । ➢ बहादुरशाह के चितौड़ आक्रमण की जानकरी मिलती है
कोघाखेड़ी (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1713 ई.	➢ कोघाखेड़ी गाँव का उल्लेख जिसे महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने दिनकर भट्ट को हिरण्याशवदान में दिया था।
राजसिंह का ताम्रपत्र	1678 ई.	➢ महाराणा राज सिंह के समय का है।

बेंगू का ताम्रपत्र	1715 ई.	➢ महाराणा संग्राम सिंह के समय का है।
बेडवास का ताम्र पत्र	1559 ई.	➢ उदयपुर बसाने के संवत् 1616 की पुष्टि पर प्रकाश डालता है।
लावा गाँव का ताम्रपत्र	1558 ई.	➢ महाराणा उदयसिंह ने लड़कियों की शादी के अवसर पर 'मापा' कर नहीं लेने आदेश । इस ताम्रपत्र से महाराणा के एकलिंगजी आने की तिथि एवं संवत 1616 में उदयपुर बसाने की पुष्टि होती है।

पुरालेखागारीय स्त्रोत

राजस्थान में पूरालेखीय स्त्रोत का विशाल संग्रह राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में सुरक्षित है, साथ ही राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में भी राजस्थान के कई रिकॉर्ड उपलब्ध है ।

राज्य अभिलेखागार बीकानेर में निम्नलिखित बहियाँ संग्रहीत है -

- हकीकत बही- राजा की दिनचर्या का उल्लेख
- हुकूमत बही - राजा के आदेशों की नकल
- कमठाना बही - भवन व दुर्ग निर्माण संबंधी जानकारी
- खरीता बही - पत्राचारों का वर्णन

साहित्यिक स्त्रोत

- राजस्थान की ऐतिहासिक जानकारी का उल्लेख रास, रासौ, वचनिका, दवावैत, प्रकास, वेलि, ख्यात आदि राजस्थानी साहित्य में मिलता है

महत्वपूर्ण तथ्य

- रास - 11वीं शताब्दी के आसपास जैन कवियों द्वारा रचा गया ।
- रासौ - रास के समानांतर राजाश्रय में रासो साहित्य लिखा गया जिसके द्वारा तत्कालीन, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितयों के मूल्यांकन की आधारभूत पृष्ठभूमि निर्मित हुई ।
- राजाओं की प्रशंसा में लिखे गए धार्मिक ग्रंथ जिसमें उनके युद्ध अभियानों एवं वीरतापूर्ण कृत्यों के साथ राजवंश का उल्लेख मिलता है।
- उदा: बीसलदेव रासौ, पृथ्वीराज रासौ।
- वचनिका – अपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी में लिखित गद्य-पद्य तुकांत रचना जिसमें अंत्यानुप्रास मिलता है।
- दवावैत – उर्दू-फारसी की शब्दावली से युक्त राजस्थानी कलात्मक लेखन शैली जिसमें किसी की प्रशंसा दोहों में होती है।
- प्रकास – किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों पर प्रकाश डालने वाली कृतियाँ प्रकास कहलाती है।
- उदा: राजप्रकास, पाबूप्रकास
- वेलि - राजस्थानी वेलि साहित्य में यहाँ के शासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, उदारता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंशावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है ।
- ख्यात - ख्यात का अर्थ होता है ख्याति अर्थात् यह किसी राजा महाराजा की प्रशंसा में लिखा गया ग्रंथ ।
  - ✓ यह वंशावली व प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रुप होता है।
  - ✓ ख्यात साहित्य गद्य में लिखा जाता है।

राजस्थानी साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराजरासो	चन्दबरदाई
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	सारंगधर
संगत रासो	गिरधर आंसिया
वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
पाथल और पीथल	कन्हैया लाल सेठिया
धरती धोरा री	कन्हैया लाल सेठिया
लीलटांस	कन्हैया लाल सेठिया
रूठीराणी, चेतावणी रा चूंगठिया	केसरीसिंह बारहठ
राजस्थानी कहांवता	मुरलीधर व्यास
राजस्थानी शब्दकोश	सीताराम लीलास
नैणसी री ख्यात	मुहणौत नैणसी
मारवाड रा परगाना री विगत	मुहणौत नैणसी
राव रतन री वेलि (बूँदी के राजा रतनसिंह के बारे में)	कल्याण दास
कान्हड़दे प्रबंध	कवि पद्मनाभ (अलाउद्दीन के जालौर आक्रमण का वर्णन)
राव जैतसी रो छंद	बीठू सूजा
राजरूपक	वीरभान
सूरज प्रकाश	करणीदान (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के दरबारी कवि)
वंश भास्कर	सूर्यमल्ल मीसण

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक युद्ध

वर्ष	युद्ध	किसके के बीच हुआ	परिणाम
1191	तराइन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	गौरी की हार हुई
1192	तराइन का द्वितीय युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	पृथ्वीराज की हार हुई
1301	रणथंभौर का युद्ध	हम्मीरदेव-अलाउद्दीन खिलजी	हम्मीर की हार
1303	चित्तौड़ का युद्ध	राणा रतन सिंह-अलाउद्दीन खिलजी	राणा रतन सिं की हार
1308	सिवाना का युद्ध	सातलदेव चौहान-अलाउद्दीन खिलजी	साहलदेव की हार
1311	जालोर का युद्ध	कान्हड देव – अल्लाउद्दीन खिलजी	कान्हड देव की हार
12 FEB 1527	बयाना का युद्ध	राणा सांगा -बाबर	राणा सांगा की विजय
1527	खानवा का युद्ध	राणा सांगा - बाबर	राणा सांगा की हार
1544	सुमेल का युद्ध (जैतारण)	मालदेव-शेरशाह सूरी	मालदेव की हार

1576	हल्दीघाटी का युद्ध	महाराणा प्रताप-अकबर	महाराणा प्रताप की हार
1582	दिवेर का युद्ध	महाराणा प्रताप, अमर सिंह - मुगल सेना	महाराणा विजयी
1644	मतीरे की राड़	अमरसिंह (नागौर)- कर्णसिंह	अमरसिंह विजयी
1803	लसवारी का युद्ध	दौलत राव सिंधिया-लॉर्ड लेक	सिंधिया की हार

अन्य पुरावशेष

- महाभारत में मत्स्य जनपद (अलवर, भरतपुर और जयपुर) का उल्लेख मिलता है जिसकी राजधानी विराट नगर थीI
- स्कंदपुराण - भारतीय राज्यों की एक सूची देता है जिसमें राजस्थान के कुछ राज्य शामिल हैं - शाकम्भरी सपादलक्ष; मेवाड़ सपादलक्ष; तोमर सपादलक्ष: वागुरी (बेडेड); विराट (बैराट); और भद्र।
- चीनी यात्री युआनच्वांग (ह्वेन त्सांग) - पो-ली-ये-ता-लो नामक स्थान का उल्लेख किया है जिसे विराट या बैराट के समकक्ष माना जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you